सम्यक

Samyak
An Institute For Civil Services

II

RAS - 23 MAINS TEST SERIES

सिद्धि-II - 013

Time : 3 Hours **Maximum Marks : 200**

हिन्दी - भाग अ, भाग ब, भाग स
Hindi - Part (A, B, C)

Paper - IV

Name :		MARKS	
Enroll. No.:	Part	Attempted Questions	Marks Obtained
Date of Birth :	Part - A		62½
Medium : Hindi	Part - B		35½
E-mail :	Part - C		7
Exam Date :	Total		105
Invigilator's Signature :			
ECN: RCN:			

अनुदेश (Instructions)

1. परीक्षा शुरू होने से पहले पुस्तिका को जाँच लें।
   Please check the booklet before commencement of the exam.
2. अंक योजना प्रत्येक खंड के प्रारम्भ में दी गई है।
   The marking scheme is given at the start of every section.
3. अभ्यर्थियों को उत्तर निर्धारित शब्द सीमा से अधिक नहीं लिखना चाहिए, इसका उल्लंघन करने पर अंक काटे जा सकते हैं।
   Candidates should not write more than the prescribed word limit in answers, violating this may result in deduction of marks.
4. अभ्यर्थियों को निर्देशित किया जाता है कि किसी भी प्रश्न का उत्तर प्रश्नोत्तर पुस्तिका में निर्धारित स्थान पर ही लिखें। बॉर्डर लाईन से बाहर प्रत्युत्तर नहीं लिखें। बॉर्डर लाईन के बाहर लिखे गये उत्तर को जाँचा नहीं जायेगा।
   Candidates are directed to write answers only in the prescribed space of booklet. They should not write answer outside the border line. Answer written outside the border line will not be checked.

	REVIEW PARAMETERS	SCALE			
		Good	Above Average	Average	Below Average
1.	DOES THE ANSWER ADDRESS THE DEMAND OF THE QUESTION?				
a.	**Answer** Relevancy		✓		
b.	**Answer Enrichment** points like use of: · **Key Terms/** Subject Vocabulary. Use of Commission/ report/ government publication/ judgements, etc. **Association with the Current Affairs and use of examples** to explain the concept and idea		✓	✓ ✓	
2.	HOW WELL IS THE ANSWER PRESENTED?				
a.	**Structure** - Intro, Body, Conclusion			✓	
b.	**Presentation** – Using Subheadings/ points/ highlighting/ flowcharts/ diagrams/ maps			✓	
c.	**Language & Grammar**		✓		
d.	**Word limit**			✓	

Detailed Comments / Feedback / Suggestions for Improvement
विस्तृत टिप्पणियाँ/फीडबैक/सुधार के लिए सुझाव

1. समय रहते सभी प्रश्नों का उत्तर लिखने का प्रयास करें।

* महत्वपूर्ण तथ्यों को रेखांकित करें।
* निबन्ध लेखन में समसामयिक तथ्यों का समावेश करें।
* उत्तर लेखन में विविधता लायें।
* सराहनीय प्रयास है जारी रखें।

Best of Luck..

भाग-अ

1. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- 4×½ = 2

(i) प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा ½

(ii) राजन् + ऋषि = राजर्षि ½

(iii) विधै + अक = विधायक ½

(iv) विद्वत् + वर्ग = विद्वद्वर्ग ½

2

2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) संश्लेषण = सम् + लेषण श्लेषण

(ii) अकिञ्चन = अकिम् + चन ½

(iii) विराडायोजन = विराट् + आयोजन ½

(iv) धूमाच्छादित = धूम + आच्छादित ½

1½

3. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए:- 4×½ = 2

(i) मूल + छिन्न = मूलाच्छिन्न ½

(ii) सत् + उद्योग = सद्उद्योग ½

(iii) परि + अवेक्षक = पर्यवेक्षक ½

(iv) ज्योतिः + आदित्य = ज्योतिर्दित्य ज्योतिर्दित्य ज्योतिरादित्य

1½

4. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- 4×½ = 2

(i) अहर्निश = अहन् + निशा ½

(ii) स्वेच्छाचार = स्वेच्छा + आचार स्वेच्छा + आचार

(iii) सौभाग्याकांक्षिणी = सौभाग्य + आकांक्षिणी ½

(iv) वपुष्मान = वपुः + मान ½

1½

5. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए:- $4\times½ = 2$ 1½

(i) विद्युद्ध्वज = विद्युत् + ध्वज ½

(ii) प्रौद्योगिकी = प्र + अद्योगिकी औद्योगिकी

(iii) हुतासन = हुत + असन ½

(iv) प्रातस्स्मरण = प्रातः + स्मरण ½

6. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- $4\times½ = 2$ 2

(i) पुनर् = पुनर्जन्म, पुनरुक्ति ½

(ii) अधः = अधोगामी, अधोलिखित ½

(iii) वि = विकार, विकास ½

(iv) प्रति = प्रत्येक, प्रतिकार ½

7. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- $4\times½ = 2$ 2

(i) आनुषंगिक = अनु + संगीक

(ii) नैराश्य = निर + आशय

(iii) वैधव्य = वि + धवा + य

(iv) अभ्युत्थान = अभि + उत्थान

8. निम्नांकित उपसर्गों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइये:- $4\times½ = 2$ 1½

(i) दु = दुकेला, दुनाली ½

(ii) उ = ऊपर, ऊँचा उखाड़ना उचक्का

(iii) स्व = स्वागत, स्वैरिणी ½

(iv) अमा = अमात्य, अमावस्या ½

9. निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) उन्नासी = उद् + नासी उन

(ii) प्राक्कथन = प्र + आ + कथन प्राक्

(iii) लाचार = ला + चार

(iv) सहित = स + हित

10. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइयेः- 4×½ = 2

(i) इत = विस्मित, चकित

(ii) आड़ी = खिलाड़ी, पिपाड़ी पीपाड़ी

(iii) इष्णु = प्रभाविष्णु, सहिष्णु

(iv) हरा = सुनहरा, पहरा

11. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- 4×½ = 2

(i) हरीतिमा = हरीत + इमा

(ii) औद्योगिकी = उद्योग + इक + ई

(iii) मनसिज = मनस् + इज

(iv) कब्रिस्तान = ~~कब्र + इस्तान~~ कब्र + इस्तान

12. निम्नलिखित प्रत्ययों के संयोग से दो-दो शब्द बनाइयेः- 4×½ = 2

(i) इश = शीश, हरीश आजमाइश, फ़रमाइश

(ii) ईन = दीन, महीन

(iii) कर = दौड़कर, चलकर

(iv) ड़ा = कोड़ा, हावड़ा चमड़ा, पकड़ा

13. निम्नांकित शब्दों में से प्रत्यय पृथक् कीजिए- $4 \times ½ = 2$

(i) तेलंगाना = आना ½

(ii) आरण्यक = अक ½

(iii) लड़का = का आ

(iv) ज्ञातव्य = तव्य ½

14. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- $4 \times ½ = 2$

(i) तिरोभाव = तिरोहित आविर्भाव

(ii) अंबर = पृथ्वी अवनि

(iii) अर्वाचीन = प्राचीन ½

(iv) सदय = निर्दय क्रूर

15. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- $4 \times ½ = 2$

(i) आह्लाद = विषाद ½

(ii) अलम् = ईषत् ½

(iii) पराभव = वैभव विजय

(iv) मसृण = रूक्ष ½

16. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- $4 \times ½ = 2$

(i) सुघड़ = ओधड़ फूहड़

(ii) विश्लिष्ट = ~~संश्लिष्ट~~ संश्लिष्ट ½

(iii) क्षणिक = शाश्वत ½

(iv) आवाहन = विसर्जन ½

17. निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए- 4×½ = 2

(i) शठ = सज्जन

(ii) ह्रास = विकास

(iii) ज्योत्स्ना = अमावस्या

(iv) स्थापन = उन्मूलन

18. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए:- 4×1 = 4

(i) अश्रु = नयननीर, नेत्रनीर, आँसू

(ii) खान = भंडार, आगार

(iii) क्षणभंगुर = नश्वर, क्षणिक, अस्थिर, अल्पजीवी

(iv) बेशुमार = असीम, बहुत, अनन्त

19. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए:- 4×1 = 4

(i) क्षीर = दुग्ध, गोरस

(ii) कूज = चहचहाट, आवाज, ध्वनि

(iii) महीधर = धरणीधर, पहाड़, शैल

(iv) अरुणोदय = सूर्योदय, प्रभात, भोर

20. निम्नांकित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिए:- 4×1 =

(i) खरा-खर्रा = विशुद्ध - लंबा चिट्ठा

(ii) स्वजन-श्वजन = बंधु - कुत्ता

(iii) शांति-श्रांति = आराम - थकावट

(iv) हरिण-हरिण्य = मृग - सोना

21. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का अर्थ भेद लिखिए:- 4×1 = 4

(i) सागर-सागऱ = समुद्र - शराब का प्याला (1)

(ii) षष्टि-षष्ठी = साठ वर्ष - छठी (1)

(iii) पावस-पायस = वर्षा - खीर (1)

(iv) प्रत्युपकार-प्रत्यपकार = ~~अपकार के~~ उपकार के बदले उपकार - अपकार के बदले अपकार (1)

22. निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिए:- 4×1 = 4

(i) किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया यथातथ्य वर्णन = इतिवृत्त (1)

(ii) शीघ्रता का अभाव = अत्वरा (1)

(iii) घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी = अटारी (1)

(iv) मोक्ष की इच्छा रखने वाला = ~~मुमूर्षा~~ मुमुक्षु / मुमुक्षु (1)

23. निम्नांकित वाक्यांशों के लिए सार्थक शब्द लिखिए:- 4×1 = 4

(i) सुख और दुःख में समान रहने वाला = मनस्वी (1)

(ii) किसी कार्य में लीन/लगा हुआ = व्यापृत (1)

(iii) जो खाना सदैव मुफ्त में दिया जाता है = सदावर्त (1)

(iv) जिस शब्द के एक से अधिक अर्थ हो = श्लेष

24. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए- 8×1 = 8

5

(i) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखो।

किन्हीं दो पर टिप्पणीयाँ लिखों।

(ii) मौर्यकालीन समय में लोग सुखी थे।

मौर्यकाल में लोग सुखी थे। 1

(iii) आपने बड़ी ऊँची कोटि की कहानी सुनाई।

आपने उच्च कोटि की कहानी सुनाई। 1

(iv) उसने हमारे नाक में दम कर दिया।

उसने हमारी नाक में दम कर दिया। 1

(v) उसने मेरे को खाना खिलाया।

उसने मुझे खाना खिलाया। 1

(vi) वह सारी रातभर जागता रहा।

वह सारी रात भर जागता रहा

(vii) उज्जवल चरित्र के लिए मानसिक दृढ़ता आवश्यक है।

उज्ज्वल चरित्र के लिये मानसिक दृढ़ता आवश्यक है। 1

(viii) तेरी बात सुनते-सुनते कान पक गये।

तेरी बातें सुनते-सुनते कान पक गये।

तुम्हारी

25. निम्नांकित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:- 4×1 =

(i) आल्हाद = आह्लाद

(ii) मिष्टान = मिष्टान्न

(iii) केलाश = कैलाश कैलास

(iv) प्रमाणिक = प्रामाणिक

26. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए:- 4×1 = 4

(i) प्रत्युत् = प्रत्युत

(ii) चन्द्रमोली = चन्द्रमौलि चन्द्रमौलि

(iii) किंववंदति = किंवदंती किंवदंती किंवदंती

(iv) प्रत्यवर्तन = प्रत्यावर्तन

27. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8

(i) तीन तेरह करना –

अर्थ -? छिन्न-भिन्न करना

जैसे ही रमेश की गलती का मैनेजर को पता चला वह तीन-तेरह करने लग गया।

(ii) शैतान के कान कतरना –

अत्यधिक शैतानी करना

मोहन का बेटा इतना चालाक है कि वह शैतान के भी कान कतर सकता है।

(iii) जहाज का काग होगी

अर्थ = ? एकमात्र ठिकाना

अगर तुम्हारे भाई भी तुम्हारा साथ छोड़ देंगे तो तुम्हारी पत्नी ही तुम्हारे लिये जहाज का काग होगी। (1)

(iv) बासी कढ़ी में उबाल आना

अर्थ = ? उचित समय बीत जाने पर इच्छा जागना

पहले तो तुम्हारी टीम मैच हारने की कगार पर पहुँच गयी थी परंतु जैसे ही राकेश गेंदबाजी के लिये मैदान पर आया तुम्हारी बासी कढ़ी में भी उबाल आ गया।

28. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए वाक्यों में सार्थक प्रयोग कीजिए:- 4×2 = 8 (3)

(i) आई तो रोजी नहीं तो रोजा-

अर्थ = ? कमाया तो खाया नहीं तो भूखे

देखो, दिल्ली जाकर अपने प्रकरण को सुलझाने की बात करता हूँ। अगर डॉ मनोहर मान गये तो रोजी और नहीं माने तो रोजा है।

(ii) खेती, खसम लेती है-

अर्थ = ? कोई काम अपने हाथ से करने पर ही ठीक होता

कोई भी चीज आसानी से नहीं मिलती उसके लिये पर्याप्त कीमत चुकानी पड़ती है। इसीलिए तो कहते हैं खेती, खसम लेती है। (1)

(iii) डायन को दामाद प्यारा- अर्थ :- अपना सबको प्यारा होता है।

मनीषा कितना भी बुरा अन्य लोगों के साथ करले परंतु अपने पति के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करती है सच है डायन को दामाद प्यारा होता है।

1

(iv) लेना एक न देना दो- अर्थ :- कोई मतलब नहीं रखना

मनोहर का कक्षा में लेना एक न देना दो वाला व्यवहार है

1

29. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) ABATE – कमी समाप्त करना घटाना

(ii) NOURISH –

(iii) QUALIFIED SUPPORT – सत्यापित सहायता सशर्त समर्थन

(iv) REPUGNANT –

(v) CERTIFY –

30. निम्नांकित पारिभाषिक शब्दों के समानार्थक हिन्दी पारिभाषिक लिखिए- 5×1 = 5

(i) **OFFICIATING –**

(ii) **STIPEND –**

(iii) **UNTENABLE –**

(iv) **CASUAL DRESS –** औपचारिक वेश
अनौपचारिक वेश

(v) **DEARNESS RELIEF –** ~~महंगाई समता~~
महंगाई राहत

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः!!

भाग-ब

1. निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए। अंक-10

ध्यान कर्म का निषेध नहीं है, अपितु पूर्ण और शुद्ध कर्म का आधार है। ध्यान को ठीक से न समझने वाले लोग ही ध्यान को कर्म का निषेध समझ बैठते हैं। ध्यान और कर्म वैसे ही हैं, जैसे रस्सी का कुएँ के भीतर जाना और बाहर आना या हृदय का सिकुड़ना और फैलना। ध्यान स्वयं को जानने का साधन है और कर्म स्वयं को बाँटने का। स्वयं को जानना आत्म-ज्ञान है और स्वयं को बाँटना प्रेम है। आत्म-ज्ञान से बुद्धि को ठीक निर्णय देने के लिए सत्य का आधार उपलब्ध होता है तो प्रेम से हृदय का विकास सम्भव हो पाता है, व्यक्तित्व की अखंडता और एकता के लिए बुद्धि और हृदय दोनों का समुचित विकास आवश्यक है। ध्यान का लक्ष्य विरोधाभासी वृत्तियों का समन्वय करके अंतर को प्रकाशित करना है और कर्म उस अन्त: ज्योति से बहने वाली करुणा और आनंद है।

ध्यान और कर्म

शीर्षक: ध्यान तथा प्रेम से आत्मज्ञान की उपलब्धि

कर्म तथा ध्यान एकाधार के तत्व हैं। ध्यान आंतरिक विकास तथा कर्म बाह्य परिवेश में ढलवाता है। कर्म, प्रेम का आधार तत्व है। प्रेम से हृदय का विकास होता है जो आत्मसिद्धि की ओर प्रेरित करता है। ध्यान प्रक्रिया है तो कर्म उसको जीवंत बनाने का साधन है।

(शब्द: 30)

ध्यान कर्म का विरोधी नहीं है
ज्ञान ... दोनों एक दूसरे के पूरक हैं
कर्म के सार प्रेम की स्थापना करता है

3½/10

अवतरण को पढ़कर उसका भाव समझें फिर शीर्षक लिखें।

सुधार करें।

2. **निम्नलिखित अवतरण का उचित शीर्षक देते हुए एक-तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण कीजिए।** **अंक-10**

''आज देश स्वतंत्र है। हमें अपनी शक्ति की वृद्धि करनी है, जिससे हमारी नवीन स्वतंत्रता की रक्षा हो सके। आए दिन ऐसे संकट हमको चुनौती देते रहते हैं जिनसे निपटने के लिए एक शक्तिशाली सेना की आवश्यकता है। यदि विद्यालयों में ही देश-सेवा की यह भावना दृढ़ हो जाए तो भविष्य के लिए बहुत बड़ी तैयारी हो सकेगी। प्राचीनकाल में आश्रमों वेद-शास्त्रों के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा भी दी जाती थी। द्रोणाचार्य ने कौरवों-पाण्डवों को सैनिक शिक्षा दी थी। सैनिक शिक्षा से शारीरिक शक्ति के साथ मानवीय गुणों का भी विकास होता है। सेवा, तत्परता, परिश्रमशीलता, निर्भयता आदि गुण इस शिक्षा से अपने आप आ जाते हैं। जीवन भी तो एक युद्धक्षेत्र ही है। इस क्षेत्र में लड़ने के लिए भी उपर्युक्त गुणों की आवश्यकता पड़ती है। हमारे देश की संस्कृति शांति प्रधान है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी शक्ति में वृद्धि न करें। आज सम्पूर्ण संसार सैनिक शिक्षा पर जो ध्यान दे रहा है उसे देखते हुए हमारे लिए भी इस ओर कदम बढ़ाना आवश्यक हो जाता है।''

4½

शीर्षक :- सैन्य शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा प्रणाली में महत्व

~~देश~~ देश को भावी संकटों से निपटने हेतु एक मजबूत सैन्य बल की आवश्यकता है। सैन्य शिक्षा न केवल शारीरिक महत्व रखती है अपितु मानवीय मूल्यों का विकास करती है। यदि मानव अपने देह रूपी युद्ध क्षेत्र में क्षेत्रज्ञ की भूमिका निभाये तो सम्पूर्ण विश्व में देश का सैन्य बल और प्रबल हो जायेगा। (शब्द : 40)

शारीरिक एवं मानवीय
गुणों का विकास
प्राचीनकाल में भी
आश्रमों की व्यवस्था

अंक-10

3. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए-

शीर्षक- स्वर्ग की गुलामी से नरक का स्वराज श्रेयस्कर माना गया है।

जब किसी से सत्ता छीनने की बात आती है तो अपना सम्पूर्ण प्रयास उसे बनाये रखने हेतु करता है परंतु ऐसी सत्ता का क्या लाभ जो मानवता तथा उसके अभिमान तथा गौरव को ही चकनाचूर कर देने वाली हो। गीता में भी कहा गया है "स्वधर्मे मरणम् श्रेयसकर परधर्मो भयावह"। यही बात श्रमण परम्परा के चार्वाकों द्वारा कही गयी थी। इसका सार यह निकलता है कि मानव को जो है उसके साथ बड़े ही गौरवशाली तरीके से रहना चाहिए तथा अधिक प्राप्ति की इच्छा में किसी महान संस्था या व्यक्ति की गुलामी नहीं करनी चाहिए। अंगराज कर्ण ने महाभारत में कहा - "विजय तन की घडी भर की दमक है, इसी संसार तक उसकी चमक है" अर्थात् मानव जाति अपने मूल्यों तथा अपनी स्वविवेकीय, आत्मसिद्धि की आवश्यकताओं के साथ समझौता न करे क्योंकि यह सभी इसी लोक तक सीमित है। अपने छोटे से सांस्थानिक विकास पर बल देना चाहिए। तथा उसकी त्रुटियों में सुधार का प्रयास करना चाहिए अपने से ऊपर किसी अन्य व्यक्ति को महत्व तब तक नहीं देना चाहिए जब तक वह पर्याप्त सम्मान का हकदार न हो।

व्यक्ति को तात्कालिक से लोभ में आकर अपने स्वाधीनता के मूल्य को नहीं खोना चाहिए तथा उसे अपने-अपने क्षेत्र में ही उत्कर्ष की ओर प्रेरित होना चाहिए। मानव जब तक कुछ बेहतर प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह अपने मूल्यों, मर्यादाओं को दांव पर लगाने से पीछे नहीं हटता। जबकि वास्तव में उसको सोचना चाहिए कि पर (अन्य) के आश्रित होकर जो तिरस्कार मिलेगा चाहे उसके बदले उसे झूठा सम्मान या भोग-विलास मिले। यह सब का अधिक महत्व नहीं होगा क्योंकि अन्ततः उसे मानव रूपी इस स्वराज की महत्ता को समझना होगा। जो उसे अंतिम शांति तथा सिद्धि प्रदान करेगी।

"न भूलें केवल जीत को लें"
"गिरा का सार शील पुनीत को लें"

महाराणा प्रताप तथा इससे सम्बन्धित उदाहरण भी दे सकते थे।

कांग्रेस द्वारा डोमिनियन की मांग का त्याग कर पूर्ण स्वाधीनता की मांग की।

4. निम्नलिखित का भाव विस्तार कीजिए- अंक-10

शीर्षक- ज्ञान-विज्ञान से मनुष्य की अभिवृद्धि हो सकती है, विकास नहीं हो सकता।

विज्ञान ने तथा मानव ने इतनी प्रगति की है कि वह आज से पाँच सौ वर्ष पहले जो कार्य पाँच दिन में करते थे अब वही कार्य वह पाँच पल में कर लेता है। विज्ञान के इस बढ़ोतरी वाले युग मे मानव जाति को आर्थिक, राजनीतिक, तकनीकी, सामाजिक पहलुओं पर अभिवृद्धि किया है। मनुष्य की आय में वृद्धि से लेकर उसके आवास पर लगे टेबल फैन तक, उसके जेब में रखे आधुनिक मोबाइल से लेकर उसके सिर के ऊपर उड़ने वाले हवाई जहाज तक, यह सभी चीजे ज्ञान-विज्ञान की ही तो देन है। परंतु विचार का विषय यह कि क्या इस अभिवृद्दि ने मानव की अपनी आंतरिक आवश्यकताओं की पूर्ति की? क्या विज्ञान वास्तव में उन पर्यावरणीय तथा मानवीय एकत्व के मुद्दे पर स्वयं को सिद्ध कर पायेगा? क्या विज्ञान कोई प्रमाणिक तथ्य रख पायेगा जो यह साबित करे कि आंतरिक विकास के सभी पहलु मात्र कपोल कल्पनाएं है? यदि नहीं तो क्या इन विषयों का विकास मानव के लिये जरुरी नहीं? इसकारण वर्तमान में देखने को मिलता है पर्यावरणीय प्रदूषण, सामरिक

3½

हिंसा, परस्पर विद्वेष, पशुओं के प्रति क्रूरता आदि। यह सब केवल विज्ञान के इस वर्तमान दौर का तो परिणाम नहीं है परंतु इन सब की बढ़ोतरी में इसकी अपनी अलग भूमिका है। मनुष्य की आंतरिक चेतना का विकास तो इस भारतीय दर्शन तथा संस्कृति की पहचान रही है। जिसे पूर्ण करने में विज्ञान का यह वर्तमान दौर कहीं न कहीं चूक गया है। मानव का अवधानात्मक पहलुओं से ध्यान हटकर मात्र अपनी भौतिक अभिवृ[illegible] पर लग चुका है। इसकारण उसने अपनी आत्मिक त[illegible] अध्यात्मिक एवं यौगिक पहलुओं पर कम ध्यान दि[illegible] है। वास्तविक विकास वही है जो मनुष्य की चौमु[illegible] अभिवृद्धि करवाये न कि ~~बाह्य~~ बाह्य इंद्रियों को तृप्ति प्रदान करवाना उसका लक्ष्य बन जाये।

आज के वैज्ञानिक युग ने मनुष्यों को जिस स्वर्ग के मृग तृष्णा में लगा दिया है उसके निर्माण में साधन बढ़े हैं, भौतिक उपकरणों में अभिवृद्धि हुई है। पर मनुष्य का वास्तविक विकास नहीं हुआ है। मनुष्य जड़ता से चेतना की ओर, शरीर से आत्मा की ओर तथा रूप से भाव की ओर अग्रसर नहीं हो पा रहा है।

5. निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। अंक-10

Although art and morality have been integral parts of society, there has always been a difference of opinion on some issues or topics. Art has often adopted and reflected offbeat behavior and attitudes. In many cases this practice of art has proved to be revolutionary. On the contrary, morality has been more tradition-based. Morality has set standards of good behavior based on social likes and dislikes in almost all areas. As a result, we have to face ethical norms at many levels, such as political ethics, business ethics, cultural ethics etc. But most emphasis is given on sexual morality. Not only this, everyone in the society is expected to know, understand and follow these codes of ethics and acceptance and taboos very well.

6

यद्यपि कला तथा नैतिकता ~~हमारी~~ हमारे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, फिर भी कई मुद्दों पर इनमें मतभेद दिखाई पड़ता है। कला, व्यवहार तथा अभिवृत्तियों के प्रतिबिंब के रूप में कार्य करती है। बहुत से मामलों में कला की यह प्रकृति विद्रोह का रूप ले लेती है। परंतु एक दूसरे छोर पर, नैतिकता का अधिक परम्परागत आधार है। सभी क्षेत्रों में नैतिकता ने सामाजिक पसंद तथा नापसंद के मानक स्थापित कर दिये हैं जो अच्छे व्यवहार पर आधारित हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि हमें बहुत से स्तर पर नैतिक मानदण्डों को झेलना पड़ता है जैसे - राजनीतिक, व्यवसायिक, सांस्कृतिक नैतिकता इत्यादि। परन्तु ज्यादा प्रभाव लैंगिक नैतिकता पर देखने को मिलता है। न केवल यही, समाज में प्रत्येक से यह आशा भी रखी जाती है कि वह इन मानदण्डों को समझे तथा इन नैतिक संहिताओं का पालन करे और इन प्रतीकों को अच्छी तरह से स्वीकृति दे।

अनुवाद में लाइन टू लाइन अनुवाद करें

6. निम्नांकित अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए। अंक-10

Science and art are fundamentally two mediums of knowledge, but in the present world they have developed as two subjects of study and thus their relative importance has decreased. At the level of thinking, science and art complement each other and it seems that it is impossible to expand the influence of one without the other. But, at the practical level, some fundamental differences between the two subjects are also visible. Art is subjective whereas science is mainly dependent on interest. Science works on the basis of collection of facts, its integration and finally general conclusions. That is, it is necessary to have cause and effect. On the other hand, art is based on imagination, feelings and emotions. Therefore, it is definitely necessary to find the solution to the given question.

विज्ञान तथा कला, ज्ञान के मौलिक रूप से दो माध्यम हैं, परंतु वर्तमान विश्व में इन्हें दो विषयों के रूप में विकसित किया जा रहा है। इससे उनकी तात्पेक्षिक महत्ता में गिरावट आई है। सोचने के स्तर पर, कला तथा विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि एक के बिना दूसरे का विस्तार संभव नहीं। परंतु, प्रायोगिक स्तर पर, कुछ मौलिक विभेद दोनों विषयों में दिखाई पड़ते हैं। कला आत्मनिष्ठ है जबकि विज्ञान तथ्यों पर निर्भर करती है। विज्ञान तथ्यों के संकलन, उनके एकीकरण तथा अंतिम निष्कर्ष पर आधारित है। इसलिए इसके कारण तथा प्रभाव होना स्वभाविक है। जबकि दूसरी ओर कला, कल्पना, भावनाओं तथा संज्ञानात्मकता पर आधारित है। इसलिए यह जरूरी रूप से आवश्यक है कि उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर/समाधान खोजा जाये।

अभ्यास करें

7. नगरीय विकास एवं स्वायत शासन विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा स्वायत शासन विभाग में कार्यरत समस्त सेवानिवृत अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवायें तुरन्त प्रभाव से समाप्त किये जाने के बावत कार्यालयी आदेश जारी किये जाने के लिए कार्यालयी आदेश का प्रारूप लिखिए। अंक-10

राजस्थान सरकार

नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग

जयपुर, राजस्थान।

का०/आ०/पत्र/2001/511 मार्च 23, 2024

आदेश।

यह सूचित किया जाता है कि राजस्थान सरकार के पत्र: 2001/9/3 के तहत नगरीय एवं स्वायत्त शासन विभाग में वर्तमान में जो भी सेवानिवृत्त कर्मचारी कार्यरत है उनकी सेवा अगले सप्ताह के प्रथम दिवस से तुरंत प्रभाव से समाप्त कर दी जावें।

ह०(कखग)

संलग्न: उक्त पत्र की छाया प्रति। स्वायत्त शासन विभागाध्यक्ष

का०/आ०/पत्र/2001/519-21 23 मार्च, 2024

प्रतिलिपि:- सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु

(1) राजस्थान सरकार का स्वायत्त शासन विभाग।

(2) राजस्थान सरकार का स्वायत्त शासन मंत्रालय।

- निजी सहायक, माननीय मंत्री महोदय, स्वायत्त शासन विभाग ह०(कखग)
- निजी सचिव शासन सचिव महोदय स्वायत्त शासन विभागाध्यक्ष
- उप निदेशक, स्थानीय निकाय विभाग, समस्त राजस्थान

(4)

प्रतिलिपि प्रभावी करें आगे

प्रारूप का अभ्यास करें।

8. माननीय कलेक्टर महोदय, जिला-बाड़मेर की ओर से कलेक्टर कार्यालय में इलेक्ट्रोनिक सामग्री के आपूर्ति बावत निविदा का प्रारूप तैयार कीजिए। अंक-10

राजस्थान सरकार

कार्यालय, जिला कलेक्टर, बाड़मेर जिला कलेक्ट्रेट, बाड़मेर।

25 जनवरी, 2024

प.क्र.| 2024 | ब-23 | 5 | 6

सूचना

निविदा संख्या :- 2024 | अब-56 | 517

शीर्षक :- कार्यालय में इलेक्ट्रोनिक सामग्री की आपूर्ति

(3)

जिला बाड़मेर में कलेक्ट्रेट पर इलेक्ट्रोनिक सामग्री की आपूर्ति सम्बंधी निविदा दिनांक 28 जनवरी 2024 को बाड़मेर जिला महाविद्यालय के परिसर में जमा होगी तथा निविदा उसी दिन दोपहर तीन बजे से खोली जायेगी। तीन बजे पश्चात कोई निविदा स्वीकार नहीं की जायेगी। इलेक्ट्रोनिक सामग्री के अंतर्गत कार्यालय हेतु पंखा, कम्प्यूटर, फैक्स मशीन इत्यादि की आपूर्ति की जानी है। समस्त सामग्री की लागत 2 लाख रुपये से कम होगी। और केवल वही निविदा स्वीकार्य की जायेगी जो इस मानदण्ड को पूर्ण करती होगी।

किसी भी निविदा को पूर्ण रूप से स्वीकार तथा अस्वीकार करने की शक्ति निम्न सरकारी पदाधिकारी में ही होगी।

जिला कलेक्टर।

निविदा के प्रारूप का अभ्यास करें।

क्र.सं.	सामग्री का नाम	[illegible]	लागत	खरीदकर्ता	अवधि	आपूर्ति

॥ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः॥

भाग-स

अंक-20

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए-
1. ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु है।
2. वैश्वीकरण बनाम संरक्षणवाद

7

शीर्षक: ई-शासन भ्रष्टाचार का शत्रु

परिभाषा
सरकार द्वारा प्रयास
लाभ
हानि
वर्तमान प्रासंगिकता, उदाहरण के सहित
सम्बन्धित सुझाव के साथ
अन्तिम चरण

वर्तमान युग प्रौद्योगिकी के चरम दौर से गुजर रहा है। इस कारण इसका प्रभाव न केवल बाह्य रूप से दिखाई पड़ता है बल्कि शासन-प्रशासन में भी इसका प्रभाव तथा महत्व दिखाई पड़ता है। उसी में एक कड़ी है – "ई-प्रशासन"। इसका सामान्य अर्थ है प्रशासन में ऐसी अत्याधुनिक प्रक्रियाओं तथा युक्तियों को अपनाया जाना जिससे प्रशासन का लक्ष्य तथा मंतव्य खुले, पारदर्शी रूप में लोगों के समक्ष प्रकट हो सके। ई-प्रशासन न केवल प्रशासन को सुदृढ़ बना रहा है बल्कि यह इसमें व्याप्त पारम्परिक बुराईयों को भी समाप्त कर रहा है।

वर्तमान में प्रशासन की उत्कृष्टता में जो मुख्य बाधा आ रही है वह यह इसमें व्याप्त भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार के कारण प्रशासन की वर्तमान तार्किकता पर भी प्रश्न खड़े हो जाते हैं। प्रशासन को जनता के प्रति समर्पित तथा उत्तरदायी बनाने हेतु इसमें

पारदर्शिता, जबावदेहिता, खुलापन को बढ़ावा देना चाहिए। और यह केवल ई-प्रशासन के द्वारा ही संभव है।

भारत तथा राजस्थान सरकार द्वारा ई-प्रशासन को बढ़ावा देने हेतु अनेक प्रयास किये हैं। चाहे भारत सरकार की डीजीटल इण्डिया पहल हो या स्किल इण्डिया पहल दोनों के तहत ई-प्रशासनिक ढाँचे को मजबूती देने की बात कही गयी है। ई-प्रशासन के प्रमुख तत्वों में जागरूक नागरिक, जागरूक प्रशासन, ई-नीति, राष्ट्रीय अवसंरचनात्मक ढाँचा, ई-मेल, ई-मित्र जैसी सुविधाएँ है एम.पी. तथा राजस्थान सरकार का जनसुनवाई गारंटी अधिनियम इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

राजस्थान सरकार द्वारा एसएसओ, राजकाज, राजकाज 2.0, चाहे ऑटो डिलेवरी रियल टाइम सर्विस प्रदाता — स्वतः हो। यह सभी कदम राज्य सरकार द्वारा उठाये गये हैं।

ई-प्रशासन वास्तविक समय में नागरिकों को उनकी सेवाएं बिना किसी लालफीताशाही तथा भ्रष्टाचार के प्रदान करवाने में सहायक होता है। आम नागरिक अपनी कार्यवाहियों

की जाँच ऑनलाइन ईमित्र या फिर अपने सेलफोन पर प्राप्त कर सकता है। ई-प्रशासन, प्रशासकों की उस परम्परागत छवि को भी मिटाता है जो उन्हें औपनिवेशिक विरासत में प्रदान हुयी है। इसकारण उनकी जवाबदेयिता न केवल सरकार के प्रति सुनिश्चित होती है बल्कि आम जनता के प्रति भी उनकी कुछ जिम्मेवारी बनती है।

ई-प्रशासन ने प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार की बीमारी को कुछ हद तक कम किया है परंतु अभी भी इसमें अवसंरचनात्मक तथा शैक्षणिक एवं तकनीकि समस्याएं हैं। जिससे अभी भी यह पूर्ण रूप से हट नहीं पाया है परंतु यह अपने उन लक्ष्यों को बखूबी पूर्ण कर रहा है जो इससे पूर्व प्रशासन में विद्यमान थी।

ई-प्रशासन वर्तमान प्रशासनिक संवेदनात्मकता की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। जनता को इसके प्रति जागरूक बनाया जाना चाहिए तथा अपने प्रशासनिक अधिकारों को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करवाना चाहिए। कोई भी चीज जो मनुष्य से भिन्न है कभी भी आदर्श नहीं हो सकती। भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं का एक मूलात्मक खात्मा मानवीय जागरूकता से साध्य व स्पष्ट रूप से संभव है।